शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर, महाराष्ट्र

दूरशिक्षण केंद्र

बी. ए. भाग-2 : हिंदी

सत्र-3 : हिंदी : (ऐच्छिक) प्रश्नपत्र क्रमांक-3

अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी गद्य साहित्य

सत्र-4 : हिंदी : (ऐच्छिक) प्रश्नपत्र क्रमांक-5

रोजगार परक हिंदी (हिंदी में रोजगार के अवसर)

(शैक्षिक वर्ष 2020-2021 से)

Scanned by CamScanner

शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर

दूरशिक्षण केंद्र

बी. ए. भाग 2 (हिंदी)

सत्र 3 : हिंदी (ऐच्छिक) प्रश्नपत्र क्रमांक–3

अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी गद्य साहित्य

सत्र 4 : हिंदी (ऐच्छिक) प्रश्नपत्र क्रमांक–5

रोजगार परक हिंदी

(हिंदी में रोजगार के अवसर)

(शैक्षिक वर्ष 2020-21 से)

Scanned by CamScanner

© कुलसचिव, शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
प्रथम संस्करण : 2020
बी. ए. भाग 2 (हिंदी : ऐच्छिक)
सभी अधिकार विश्वविद्यालय के अधीन। शिवाजी विश्वविद्यालय की अनुमति के बिना किसी भी सामग्री की नकल न करें।

प्रतियाँ : 500

■

प्रकाशक :
डॉ. व्ही. डी. नांदवडेकर
कुलसचिव,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

मुद्रक :
श्री. बी. पी. पाटील
अधीक्षक,
शिवाजी विश्वविद्यालय मुद्रणालय,
कोल्हापुर - 416 004.

■

ISBN-978-93-89327-96-0

★ दूरशिक्षण केंद्र और शिवाजी विश्वविद्यालय की जानकारी निम्नांकित पते पर मिलेगी-
शिवाजी विश्वविद्यालय, विद्यानगर, कोल्हापुर-416 004. (भारत)

Scanned by CamScanner

इकाई लेखक

लेखक	इकाई
सत्र 3 – हिंदी : (ऐच्छिक) पेपर क्रमांक–3 : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी गद्य साहित्य	
★ **डॉ. एस. पी. चिंदगे** देशभक्त आनंदराव बळवंत नाईक आर्टस ॲण्ड सायन्स कॉलेज, यशवंतनगर चिखली, ता. शिराळा, जि. सांगली	1
★ **डॉ. के. वाय. धुमाळ** आर्टस ॲण्ड कॉमर्स कॉलेज, वडूज, ता. खटाव, जि. सातारा	2
★ **प्रा. डॉ. संग्राम यशवंत शिंदे** आमदार शशिकांत शिंदे महाविद्यालय, मेढा, ता. जावळी, जि. सातारा	3
★ **डॉ. दिपक तुपे** विवेकानंद कॉलेज, कोल्हापूर	4
सत्र 4 – हिंदी : (ऐच्छिक) पेपर क्रमांक–5 : रोजगार परक हिंदी (हिंदी में रोजगार के अवसर)	
★ **प्रा. प्रकाश चिकुर्डेकर** यशवंतराव चव्हाण वारणा महाविद्यालय, वारणानगर, ता. पन्हाळा, जि. कोल्हापुर	1
★ **प्रा. डॉ. विनायक बापू कुरणे** बाळासाहेब देसाई कॉलेज, पाटण, जि. सातारा	2
★ **डॉ. अजयकुमार कृष्णा कांबळे** कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, कोवाड, ता. चंदगड, जि. कोल्हापुर	3
★ **प्रा. डॉ. मोहन मंगेशराव सावंत** मा. श्री. आण्णासाहेब डांगे कला, वाणिज्य व विज्ञान महाविद्यालय, हातकणंगले, जि. कोल्हापुर	4

■ सम्पादक ■

डॉ. एस. पी. चिंदगे
देशभक्त आनंदराव बळवंतराव नाईक आर्टस ॲण्ड सायन्स कॉलेज, यशवंतनगर चिखली, ता. शिराळा, जि. सांगली

डॉ. आर. पी. भोसले
कला, वाणिज्य व शास्त्र महाविद्यालय, पुसेगाव, ता. खटाव, जि. सातारा

Scanned by CamScanner

अनुक्रमणिका

इकाई		पृष्ठ
	सत्र 3 - हिंदी : (ऐच्छिक) पेपर क्रमांक–3 : अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी गद्य साहित्य	
1.	कथा साहित्य (1) जीती बाजी की हार (2) गृह-प्रवेश (3) घर की तलाश	1
2.	कथा साहित्य (4) जॉर्ज पंचम की नाक (5) पहाड़ (6) सिक्का बदल गया	25
3.	कथेत्तर साहित्य (7) अकेलापन और पार्थक्य (डायरी अंश) (8) घर लौटते हुए (आत्मकथा अंश)(9) धरती और धान (जीवनी अंश)	47
4.	कथेत्तर साहित्य (10) अखबारी विज्ञापन (रेडिओ नाटक) (11) वकील साहब (12) म. गांधी (संस्मरण)	66
	सत्र 4 - हिंदी : (ऐच्छिक) पेपर क्रमांक–5 : रोजगार परक हिंदी (हिंदी में रोजगार के अवसर)	
1.	रोजगार परक हिंदी	95
2.	अनुवाद स्वरूप : संक्षेप में परिचय	115
3.	रोजगार परक पद : सामान्य परिचय	139
4.	पत्रलेखन	151

Scanned by CamScanner

10. अखबारी विज्ञापन (रेडिओ नाटक)

– चिरंजीत

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवरण

4.3.1 चिरंजीत का परिचय

4.3.2 'अखबारी विज्ञापन' का कथानक

4.4 स्वयं–अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयं–अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

4.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप–

- चिरंजीत के व्यक्तित्व एवं वाङ्मय से परिचित होंगे।
- पति–पत्नी के रिश्तों को समझ जाएँगे।
- स्वस्थ पारिवारिक संबंध बन जाएँगे।
- मानवी रिश्तों–नातों के संदेह, आशंका और गलतफहमी दूर हो जाएगी।

Scanned by CamScanner

4.2 प्रस्तावना

अखबारी विज्ञापन चिरंजीत की हास्य-व्यंग्यात्मक एकांकी है। आज का युग विज्ञापन का युग है। मानव जीवन में जीवनोपयोगी एवं जीवनावश्यकताओं का प्रकटीकरण का महत्वपूर्ण माध्यम विज्ञापन है। आधुनिक युग में मानव जीवन की सुख-दुःख की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम विज्ञापन माना जाता है। इसलिए आज हम हर चीज एवं आवश्यकता का समाधान विज्ञापन के द्वारा खोजते हैं। नौकरी, शादी-ब्याह, कामकाज संबंधी, क्रय-विक्रय जैसे जरूरतें एवं आवश्यकताएँ भी विज्ञापन का रूप धारण करने लगी है। ऐसे में विज्ञापन की एक छोटी-सी भूल भी मानव जीवन में कितना बड़ा बवंडर खड़ा कर देती है; इसका सशक्त उदाहरण चिरंजीत की 'अखबारी विज्ञापन' एकांकी है। प्रस्तुत एकांकी में विज्ञापन की एक छोटी भूल पति-पत्नी के बीच गलतफहमी पैदा करती है, जिससे दोनों के बीच में संदेह की स्थिति पैदा होती है और आखिरी में विज्ञापन की गलती दूर होते ही हास्य-व्यंग्य के फवारे फूट जाते हैं और समस्या का समाधान भी हो जाता है।

4.3 विषय विवेचन

4.3.1 चिरंजीत का परिचय

एकांकीकार चिरंजीत आकाशवाणी से जुड़े रहकर बहुताधिक नाटक-एकांकी की रचना करने वाले ख्यातिकीर्त रेडियो नाटककार है। उन्होंने हास्य-प्रधान, गंभीर, रोमांचक और दुखांत नाटक लिखे हैं। चिरंजीत का जन्म 18 दिसंबर, 1919 को पंजाब के अमृतसर के एक ठाकुर परिवार में हुआ। चिरंजीत ने सन् 1938 ई. में कवि के रूप में अपने लेखन का प्रारंभ किया। उन्होंने एकांकी, नाटक, कविता, हास्य कथा और बाल-साहित्य की लगभग डेढ़ दर्जन से अधिक किताबें प्रकाशित हो चुकी हैं। वे पत्रकारिता, रेडियो नाटक, एकांकी लेखन से आजीवन जुड़े रहें। उन्होंने 'साप्ताहिक वीर अर्जुन', 'साप्ताहिक जनसत्ता' और 'मासिक मनोरंजन' जैसी पत्रिकाओं का सफल संपादन किया। एक सफल नाटककार के रूप में अपनी अलग पहचान बनाते हुए आकाशवाणी के केंद्रीय नाटक विभाग के चीफ प्रोड्यूसर जैसे सर्वोच्च पद को विभूषित कर दिसंबर 1979 में सेवानिवृत्त हो गए। सन् 1982-1984 से उन्होंने दूरदर्शन तथा आकाशवाणी के प्रोड्यूसर एमेरिटस के मानद पद पर नियुक्त रहे हैं और प्रसिद्ध साहित्यिक मासिक पत्रिका 'सर्वप्रिय' का संपादक भी रहें।

चिरंजीत की 50 से अधिक रेडियो एकांकियों का प्रसारण हो चुका है। इसी कारण रेडियो नाटककार एवं एकांकीकार के रूप में उन्हें सबसे अधिक ख्याति मिली है। इसमें सन् 1965 तथा 1979 में भारत-पाकिस्तान युद्धों का दौरा जारी था। ऐसे समय पर देशभर के आकाशवाणी केंद्रों से

Scanned by CamScanner

उनका 'ढोल की पोल' व्यंग्य नाटक प्रसारित हुआ। उसमें 'रंगारंग' एकांकी संग्रह की 'ब्याह की धूम', 'खजाने का साँप', 'मेहमान', 'अखबारी विज्ञापन', 'होली आई रे लला', 'पतझड़ की एक रात', 'मकान, बह आया', 'सड़क पर', 'साथवाला', 'पतित पावन' आदि एकांकियाँ उल्लेखनीय है। उन्होंने अपने नाटकों में विभिन्न विषयों को प्रस्तुति देते हुए मनोरंजन को प्रधानता दी है। उनके कुछ नाटक चरित्रांकन पर विशेष बल देते हैं तो कुछ नाटक सामाजिक रूढ़ि-परंपरा, अंधविश्वास और विसंगतियों का पर्दाफाश करते हैं। शिल्पगत विविधता उनके नाटकों की खास विशेषता रही है। उनका हर नाटक किसी-न-किसी रहस्य को खोल देता है। उनके नाटक एवं एकांकी के कथानक आकस्मिक मोड़ लेते हुए हास्य-व्यंग्य पैदा करते हैं, पाठकों के मन में गुदगुदी पैदा करते हैं। उनके नाटक एवं एकांकी की भाषा सरल, सहज, प्रवाहमयी है। उनकी भाषा में बोलचाल के शब्दों का अधिक प्रयोग दिखाई देता है। उनकी भाषा में वाकपटुता एवं हास्य-व्यंग्य का पुट नजर आता है। सन् 1972 ई. में चिरंजीत को राष्ट्रपति के हाथों पद्मश्री पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया। 'दादी माँ जागी' दूरदर्शन नाटक ने उन्हें बहुत लोकप्रियता दी। दिल्ली अकादमी की ओर से चिरंजीत को सर्वश्रेष्ठ नाट्य कृति के रूप में सम्मानित किया गया। चिरंजीत को रेडियो नाटक के माध्यम से बहुत प्रसिद्धि मिली। इसलिए उनका सेवाकाल भारतीय रेडियो नाटक के इतिहास का 'चिरंजीत युग' कहलाता है।

4.3.1 'अखबारी विज्ञापन' का कथानक

चिरंजीत लिखित 'अखबारी विज्ञापन' यह एक रेडियो एकांकी है; जो विज्ञापन की बॉक्स नंबर की गलती के कारण पैदा हुई समस्याओं का बेहतरीन चित्रण प्रस्तुत करता है। एकांकी का नायक मदनमोहन है; जोंकि एक प्राइवेट फर्म बिज्जामल-गिज्जामल में टाइपिस्ट है। उसकी उम्र 30-32 वर्ष की है। उसे महावार 100 रुपए तनख्वाह मिलती है। महँगाई के जमाने में उसे सौ रुपए में घर चलाना मुश्किल हो रहा है; इसलिए वह अधिक वेतन की दूसरी नौकरी पाने हेतु 'नेशनल' पत्रिका में विज्ञापन देता है। विज्ञापन का मजमूजन इस प्रकार है। 'नौकरी चाहिए-एक योग्य तथा अनुभवी टाइपिस्ट को, जो शार्टहैंड भी जानता है। आजकल एक प्रसिद्ध फर्म में काम कर रहा है। अधिक वेतन के लिए परिवर्तन चाहता है। पत्र-व्यवहार के लिए पता-बॉक्स नंबर 3111, मार्फत 'नेशनल पत्रिका।' विज्ञापन जारी होने के सात दिन बाद मदनमोहन पंडित जी से अपनी नौकरी का भविष्य जानने की कोशिश करता है। कुंडली, जन्मपत्री, सिंह राशि, शुभमुहर्त, भाग्यवृद्धि, यजमान, नया संबंध आपके लिए शुभयोग होगा आदि बातें दुर्गा दरवाजे के पीछे से चोरी-छिपे सुनती है और इन सारी बातों से उसके मन में संदेह करती है कि उसका पति मदनमोहन दूसरी शादी करना चाहता है। इसी कारण दुर्गा पंडित जी और मदनमोहन पर बहुत ही क्रोधित हो जाती है और दोनों को

Scanned by CamScanner

भलाबुरा कहती है। दोनों दुर्गा को बहुत समझाने की कोशिश करते हैं, मगर वह नहीं मानती। वह पंडित जी से कहती है - 'मुझसे ही रोज दान-दक्षिणा लेकर मेरा ही सत्यानाश करने निकले हो, कुंडली देखी, शुभ मुहूर्त सोच लिया, लग्न घड़ी तय कर ली और अब अनजान बनकर पूछते हो, दूसरी शादी कैसी? और वह उन्हें गालियाँ देने लगती है। पंडित जी से कहने लगती है कि जिस थाली में आप खाते हैं, उसी में छेद करते हो, शर्म नहीं आती? मेरी ही छाती पर मूँग दलने के लिए सौत लाई जा रही है।' पंडित जी दुर्गा को समझाने का प्रयास करते हैं, मगर लाख समझाने के बावजूद वह नहीं मानती। वह अपने पति मदनमोहन के पीछे पड़ती है और कहती है कि 'वह दूसरी औरत की तरह पति के पाँव की जूती नहीं, कि जी चाहा तो पहन लो, जी चाहा तो उतार कर फेंक दो। मुझमें आखिर क्या दोष है। लूली हूँ, लंगड़ी हूँ, अंधी हूँ या बदसूरत हूँ...?' यह विवाद बढ़ता हुआ देख पंडित जी जैसे-तैसे अपना पोथी-पत्रा समेटकर भाग जाते हैं। फिर भी जाते समय दुर्गा पंडित जी को घर में कदम न रखने, दान-दक्षिणा और पुरोहिताई बंद करने की हिदायत देती है। इतना होने के बावजूद मदनमोहन आटा लाने की बात करता है तब वह कहती है अब तुम आटा नई घरवाली के आने पर ही लाना। वही आकर खाना बनाएगी और तुम्हें दफ्तर भेज देगी। वह यह भी कहती है कि कैसे सौ रुपल्ली में दो बीवियों का खर्चा चलाते हो। मदनमोहन 'नेशनल' पत्रिका का अंक उठाकर अखबार में छपा विज्ञापन उसे दिखाता है। दुर्गा उसे ध्यान से पढ़ती है और पूछती है कि कैसे मान लू कि यह विज्ञापन का ब्रॉस नंबर 3111 तुम्हारा ही दिया हुआ है। नेशनल पत्रिका में ब्रॉस नंबर 311 है; जोंकि शादी की नई बीवी की तलाश का है।

पति-पत्नी के बीच जारी विवाद के बीच डाकिया आता है और एक लिफाफा देकर चला जाता है। वह लिफाफा स्वयं मदनमोहन नहीं खोलता क्योंकि दुर्गा उसे हाथ की सफाई कहेगी, इसलिए वह दुर्गा को ही लिफाफा खोलने और खुद सच्चाई अवगत करने की बात करता है। 'नेशनल' पत्रिका द्वारा प्राप्त लिफाफा खोलकर और अंदर की चिट्ठियाँ देखकर दुर्गा का गुस्सा और उबल पड़ता है क्योंकि लिफाफे में पांच रूपवती एवं गुणवती कन्याओं की शादी की अर्जियाँ थी। यह देखकर मदनमोहन चौंक जाता है और हैरत से हक्का-बक्का-सा रह जाता है। दुर्गा मदनमोहन को फोटो उठाते हुए कहती है, यह तो बिल्कुल फिल्म-ऐक्ट्रेस मालूम पड़ती है। क्या रूप पाया है इसने। दूसरी मेरठ वाली है उसने तो बाप, भाई या अभिभावक को बिना बताए खुद ही अर्जी भेज दी है। प्रोफेसर होने की वजह से फारवर्ड मालूम होती है। इस बीच, मदनमोहन गिड़गिड़ाते हुए दुर्गा से सच बताने और उसका यकीन करने की नाकाम कोशिश करता है। वह पति की एक भी बात नहीं सुनती। वह शादी का विज्ञापन देने और लड़की वालों को गुमराह करने का बड़ा अपराध मानती

Scanned by CamScanner

है और सबके पते पर पत्र लिखकर उनके घरवालों को असलीयत अवगत कराना चाहती है। पति मदनमोहन से वह मुँहतोड़ जवाब देती है, मैं और स्त्रियों की तरह बेजबान गाय-बकरी नहीं, जो चुपचाप यह अत्याचार सहन कर लूँ। मेरा रोम-रोम प्रतिहिंसा की ज्वाला से जल रहा है। मेरे जीते-जी तुम दूसरी शादी नहीं कर सकते।' 27-28 साल की दुर्गा रनचंडी का अवतार धारण करते हुए पति को हिदायत देती है कि 'दूसरी शादी होने से पहले मैं तुम्हें मारकर खुद फाँसी पर लटक जाऊँगी।' इतने में दरवाजे पर दस्तक होती है। वह पत्नी को अंदर जाने के लिए कहता है, मगर दुर्गा नहीं मानती। मदनमोहन जब दरवाजा खोलता है तब सामने 'नेशनल' पत्रिका से अखबार का मैनेजर था, जोकि अपने दफ्तर की गलती की क्षमा माँगने आया था। इससे चिट्ठियों का रहस्य खुल जाता है। मैंनेजर बताता है कि टाइपिस्ट की भूल से बाक्स नंबर 3111 के बदले 311 बॉक्स नंबर लिखा गया। इस गड़बड़ी के कारण चिट्ठियों की हेराफेरी हो गई।

मदनमोहन जी ने नौकरी के लिए विज्ञापन दिया था। इसमें इनकी कोई गलती नहीं है और मैंने टाइपिस्ट को बरखास्त कर दिया है। यदि आप चाहे तो उसकी जगह पर दो सौ रुपए मासिक वेतन पर हमारे दफ्तर में काम कर सकते हो। मदनमोहन यह नौकरी सहर्ष स्वीकार करता है, मगर आज के बदले वह कल काम शुरू करना चाहता है, योंकि पंडित जी को बुलाकर वह दुर्गा के साथ दूसरी शादी करना चाहता है। मैंनेजर कहता है कि इसके लिए आपको हमारे अखबार में विज्ञापन देना होगा। इस पर सब हँसते हैं। टाइपिस्ट की नौकरी का शुभसंदेह पति-पत्नी को प्रसन्न कर देता है और दोनों में फिर से स्नेह एवं विश्वास में दृढ़ हो जाता है।

प्रस्तुत एकांकी रेडियो पर भी प्रसारित हो चुकी है और कई बार रंगमंच पर भी खेला गया है। प्रस्तुत एकांकी में नायक के रूप में मदनमोहन, नायिका के रूप में दूर्गा और पंडित मुख्य पात्र है जबकि गौण पात्र के रूप में मैनेजर और डाकिया आ जाते हैं। एकांकी में भावों के उतार-चढ़ाव के अनुसार शब्द प्रयोग दिखाई देता है। संवाद एकांकी का प्राणतत्त्व है, जो एकांकी का सौंदर्य को बढ़ावा देता है। कथानक में गति है, जो लक्ष्य की ओर ले जाती है। विज्ञापन की एक छोटी-सी भूल के माध्यम से हास्य-व्यंग्य का ताना-बाना बहुत बेहतरीन तरीके से बुना गया है। एकांकी में आदि से लेकर अंत तक जिज्ञासा एवं कौतुहल बना रहता है। यह एक सफल एकांकी है।

सारांश यह कि एकांकीकार चिरंजीत ने 'अखबारी विज्ञापन' एकांकी के माध्यम से स्पष्ट किया है कि आधुनिक युग के विज्ञापन की छोटी-सी भूल पति-पत्नी के बीच संदेह, आशंका और गलतफहमी पैदा करती है और इसी गलतफहमी से संघर्ष एवं अविश्वास का माहौल बन जाता है जिसके कारण पति-पत्नी एक-दूसरे की जान लेने के लिए उतारू हो जाते हैं। यदि पति-पत्नी के

Scanned by CamScanner

जीवन में संदेह, आशंका और गलतफहमी वास करती है तो वह संघर्ष का कारण बन जाती है। यही संघर्ष की भावना उग्र रूप धारण करती है। जब तक संदेह, आशंका और गलतफहमी दूर नहीं होती तब तक पति-पत्नी के बीच अनबन, झगड़ा और विवाद की स्थिति बनी रहती है और जैसे ही गलतफहमी दूर हो जाती है तो पति-पत्नी के बीच स्नेह, प्यार और विश्वास की डोर कायम हो जाती है। इसलिए पति-पत्नी का एक-दूसरे के बीच संदेह, आशंका और गलतफहमी की जगह पर विश्वास और प्रेम होना बहुत ही मायने रखता है।

4.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न।

1. मदनमोहन ..... फर्म में टाइपिस्ट था।

   (क) बिज्जामल-गिज्जामल *(ख) बिज्जामल*

   (ग) गिज्जामल *(घ) नेशनल।*

2. रेडियो नाटककार के रूप में ..... प्रसिद्ध है?

   (क) मन्नू भंडारी *(ख) चिरंजीत* *(ग) सफदर हाशमी* *(घ) कमलेश्वर*

3. मदनमोहन का ब्रास नंबर ..... था।

   (क) 3111 *(ख) 311* *(ग) 313* *(घ) 131*

4. चिरंजीत को सन् 1979 ई. में भारत सरकार द्वारा ..... उपाधि से अलंकृत किया गया।

   (क) पद्मश्री *(ख) पद्मभूषण* *(ग) पद्म* *(घ) भारतरत्न*

5. मदनमोहन को ..... बाक्स नंबर की चिट्ठियाँ भेजी गई।

   (क) 3111 *(ख) 311* *(ग) 313* *(घ) 131*

6. 'दूसरी शादी होने से पहले मैं तुम्हें मारकर खुद ..... पर लटक जाऊँगी।'

   (क) फाँसी *(ख) पेड़* *(ग) शेड* *(घ) इमारत*

7. 'मेरे जीते-जी तुम दूसरी ..... नहीं कर सकते।'

   (क) पत्नी *(ख) शादी* *(ग) नौकरी* *(घ) सौतन*

8. 'दुर्गा, मेरी बात पर ..... करो, यह विज्ञापन मैंने नहीं दिया।'

   (क) विश्वास *(ख) भरोसा* *(ग) गौर* *(घ) चिंतन*

Scanned by CamScanner

9. 'नेशनल पत्रिका के ही दफ्तर से ..... आई है, भगवान ने मेरी लाज रख ली।'

(क) फोटो *(ख) अर्जियाँ* *(ग) चिट्ठी* *(घ) पत्रिका*

10. 'दुर्गा, तुम्हें बेकार का ..... हो गया है।'

(क) अहम *(ख) वहम* *(ग) रहम* *(घ) गम*

11. 'जिस स्त्री की छाती पर मूँग दलने के लिए सौत लाई जा रही हो, वह गालियाँ न देगी, तो क्या ..... देगी?'

(क) असीसें *(ख) आशींवचन* *(ग) गालियाँ* *(घ) वरदान*

12. 'मैं दूसरी ..... की तरह पति के पाँव की जूती नहीं कि जी चाहा तो पहन लो, जी चाहा तो उतार कर फेंक दी।'

(क) पत्नी *(ख) औरत* *(ग) नारी* *(घ) सौतन*

13. 'अजी, गड़बड़ तो ..... वाली ने कर डाली है।'

(क) कानपुर *(ख) मेरठ* *(ग) दिल्ली* *(घ) जयपुर*

14. 'मेरी बेटी हजारों में है - रूपवती, ... ।'

(क) कलावती *(ख) गुणवती* *(ग) सदाचारिणी* *(घ) धनवती।*

15 'रहने दो यह अपना बहुरूपियापन! आज मैंने आपका ..... रूप देख लिया है।'

(क) झूठा *(ख) असली* *(ग) वास्तविक* *(घ) बेढंगा।*

4.5 पारिभाषिक शब्द

- **धर्मभीरूता :** धर्म से डरनेवाला।
- **यजमान :** यज्ञ करनेवाला व्यक्ति, ब्राह्मणों से धार्मिक कृत्य करानेवाला व्यक्ति।
- **कुण्डली :** कुंडल, ज्योतिष में चौकोर लिखावट, जन्मकुंडली, गेंडुरी, कुंडलिनी।
- **षड्यंत्र :** साजिश, दूरभिसंधि, धोखा देने की योजना।
- **वहम :** मिथ्या संदेश, शक, शंका।
- **बेगाना :** गैर, पराया, अनजान।
- **किंकर्तव्यविमूढ़ :** जो यह न समझ सके कि अब क्या करना चाहिए, भौंचक्का, दुविधा भरी स्थिति।

Scanned by CamScanner

- **इश्तहार :** सार्वजनिक सूचना, विज्ञापन।
- **कतरन :** कतरने के बने टुकड़े, छोटे-छोटे टुकड़े।
- **नत्थी :** कागज आदि के टुकड़ों को एक में गूँथना, एक में गूँथे हुए कागज आदि के टुकड़े।

4.6 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्नों के उत्तर।

1. *(क) बिज्जामल-गिज्जामल।*
2. *(ख) चिरंजीत।*
3. *(क) 3111*
4. *(क) पद्मश्री।*
5. *(ख) 311*
6. *(क) फाँसी।*
7. *(ख) शादी।*
8. *(क) विश्वास।*
9. *(ग) चिट्ठी।*
10. *(ख) वहम।*
11. *(क) असीसें।*
12. *(ख) औरत।*
13. *(ख) मेरठ।*
14. *(ख) गुणवती।*
15. *(ख) असली।*

4.7 सारांश

1. विज्ञापन की छोटी-सी भूल पति-पत्नी के बीच गलतफहमी पैदा करती है और वही संघर्ष एवं अविश्वास का कारण बन जाती है; जिसके कारण पति-पत्नी एक-दूसरे की जान लेने के लिए उतारू हो जाते हैं। जब तक यह संदेह, आशंका और गलतफहमी दूर

Scanned by CamScanner

नहीं होती तब तक पति-पत्नी के बीच अनबन, झगड़ा और विवाद की स्थिति बनी रहती है और जैसे ही गलतफहमी दूर हो जाती है तो पति-पत्नी के बीच स्नेह, प्यार और विश्वास की डोर कायम हो जाती है। इसलिए पति-पत्नी का एक-दूसरे के बीच संदेह, आशंका और गलतफहमी की जगह पर विश्वास और प्रेम होना बहुत ही मायने रखता है; चिरंजीत की 'अखबारी विज्ञापन' एकांकी इसी बात की पूरजोर हिमायत करता है।

4.8 स्वाध्याय

1. 'अखबारी विज्ञापन' एकांकी की कथावस्तु लिखिए।
2. मदनमोहन का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3. दुर्गा का चरित्र-चित्रण कीजिए।
4. 'अखबारी विज्ञापन' का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
5. 'अखबारी विज्ञापन' नाटक कीं भाषा-शैली स्पष्ट कीजिए।
6. 'अखबारी विज्ञापन' एकांकी में चित्रित व्यंग्य को स्पष्ट कीजिए।
7. 'अखबारी विज्ञापन' एकांकी के संवादों की चर्चा कीजिए।

4.9 क्षेत्रीय कार्य

1. किसी भी एक घटना या प्रसंग पर एकांकी लिखिए।
2. किसी भी एक विषय पर विज्ञापन लिखिए।
3. 'अखबारी विज्ञापन' का मराठी में अनुवाद कीजिए।
4. किसी एक अनुभव का रेडियो एकांकी लिखिए।

4.10अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. **चिरंजीत** : 'रंगारंग' (एकांकी संग्रह)।
2. **चिरंजीत** : 'ढोल की पोल' (नाटक)।

-- 0 --

Scanned by CamScanner

11. वकील साहब

– आ. विनयमोहन शर्मा

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 विषय विवरण

4.3.1 आ. विनय मोहन शर्मा का परिचय

4.3.2 'वकील साहब' रेखाचित्र का कथानक

4.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

4.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप-

- वकीली पेशा की सच्चाई से अवगत हो जाएँगे।
- अदालत और भोलभाले वकील की दयनीयता जान पाएँगे।

4.2 प्रस्तावना

आ. विनय मोहन शर्मा लिखित 'वकील साहब' रेखाचित्र उनके 'रेखा और रंग' संकलन में संकलित है। प्रस्तुत रेखाचित्र गदाधर सिंह या गद्दू नामक वकील के वकालात की कथा है। प्रस्तुत

Scanned by CamScanner

रेखाचित्र में एक ऐसे भोलेभाले वकील का चित्रण है; जिन्हें जिंदगी में पहला और आखरी केस मिल जाता है, मगर वह भी कम्प्रोमाइज हो जाता है। उसमें दलाल और मुंशी सारी आमदनी खा जाते हैं और वकील साहब के हाथ में कुछ नहीं रहता। यह रेखाचित्र वकालात पेशा की दयनीयता के साथ-साथ भोलेभाले वकील की वकालात की हालात पर व्यंग्य कसता है।

4.3 विषय विवेचन

4.3.1 आ. विनय मोहन शर्मा का परिचय

आ. विनय मोहन शर्मा का जन्म 16 अक्तूबर, 1905 में मध्य प्रदेश के करकबेल में हो गया। उनका मूल नाम पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा मध्य प्रदेश के खांडवा में हुई। उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय से बी.ए., नागपुर विश्वविद्यालय से एम.ए. तथा पीएच्. डी. और आगरा विश्वविद्यालय से एल.एल. बी. की उपाधि हासिल की। सन् 1933 ई. में उन्होंने वकालात की शुरुआत की। सन् 1940 ई. में वे सिटी कॉलेज, नागपुर (मध्य प्रदेश) में प्राध्यापक के रूप में नियुक्त हो गए। उसके बाद उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय में हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। शासकीय स्नातक कला-विज्ञान महाविद्यालय में हिंदी विभाग के अध्यक्ष के रूप में भी कार्य किया। रायगढ़ स्थित गव्हर्नमेंट डिग्री कॉलेज के प्रधानाचार्य पद को सुशोभित करते हुए सन् 1960 ई. में उन्होंने अवकाश ग्रहण किया। उन्होंने कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में हिंदी विभागाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। सितंबर 1993 ई. में उनका देहावसान हो गया।

❑ कृतित्व

आ. विनय मोहन शर्मा जी ने अपना साहित्यिक जीवन कविता लेखन से आरंभ किया। पहले वे 'वीरात्मा' उपनाम से लिखते थे। छात्रावस्था से ही वे साहित्य सृजन से जुड़े रहें। उन्होंने गद्य एवं पद्य की कई विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई। उन्होंने उच्च स्तर के आलोचनात्मक निबंध और महत्वपूर्ण समीक्षात्मक ग्रंथों का लेखन भी किया है। नई पीढ़ी के शोधार्थियों और साहित्यकारों को उन्होंने पथ-प्रदर्शन का कार्य किया। उन्होंने शोध कार्य को वैज्ञानिक रूप प्रदान करने का अहम कार्य किया। उनकी रचनाओं की भाषा में शुद्ध परिमार्जित खड़ीबोली की प्रवाहमयता दिखाई देती है। उनकी भाषा में तत्सम शब्द के साथ-साथ अंग्रेजी, उर्दू और स्थानीय भाषाओं के शब्दों का प्रयोग दिखाई देता है। भाषा का सरलतम रूप उनके साहित्य की खास विशेषता रही है। उनकी रचनाओं में वर्णनात्मक, विवेचनात्मक, चित्रात्मक, हास्य-व्यंग्य, अलंकारिक, आत्मपरक और समीक्षात्मक शैलियों का प्रयोग किया हुआ दिखाई देता है।

Scanned by CamScanner

- **काव्य-संग्रह** : 'भूले गीत' (1944) (राष्ट्रीय काव्य-संग्रह)
- **निबंध संग्रह** : 'दृष्टिकोण', 'साहित्यावलोकन', 'साहित्य शोध-समीक्षा', 'भाषा साहित्य समीक्षा'।
- **संस्मरण और रेखाचित्र** : 'रेखाएँ और रंग'।
- **शोध प्रबंध** : 'हिंदी को मराठी संतों की देन'।
- **आलोचना** : 'कवि प्रसाद का आँसू और अन्य कृतियाँ।'
- **शोध विज्ञान** : 'व्यावहारिक समीक्षा', 'शोध प्रविधि।'

4.3.2 'वकील साहब' रेखाचित्र का कथानक

लेखक आ. विनय मोहन शर्मा लिखित 'वकील साहब' यह एक ख्यातिकीर्त रेखाचित्र है। रेखाचित्र में गदाधर सिंह नामक वकील साहब है; जिन्हें लोग गद्धू वकील, गद्धू वकील साहब, गद्ध, सिंह वकील साहब नाम से संबोधित करते हैं। यह वकील साहब जिस मुहल्ले में रहते हैं उन्हें भी कई नामों से जाना जाता है; जैसे फोरसेथगंज, परदेसीपुरा, जवाहरगंज, वकील अवर आदि। वकील साहब 'देस' प्रतापगढ़ से आकर ऐसे बहुनामा मुहल्ले के अधिवासी हुए है; जो हर नाम को सार्थक करता है। वे शुद्ध खादी के सूट और हैट में रहते हैं। वे थोड़ी-बहुत देशभक्ति भी करते हैं। चुनाव के समय वे कांग्रेसी उम्मीदवारों के पक्ष में प्रचार-कार्य करते और मिनिस्टरों के आगमन के समय स्वागत-सत्कार में भी आगे रहते थे।

एक दिन लेखक इंदौर से खांडवा जा रहा था। जब रेलगाड़ी मोरटक स्टेशन पर आकर रूकती है तब भीड़ चीरते हुए वकील साहब डिब्बे में घुसकर ठीक लेखक के सामने आ जाते हैं। लेखक 'नमस्ते' करते ही वे वही खिसकर बैठ जाते हैं। लेखक को अपनी उदारता बड़ी कष्टकर लगी क्योंकि लेखक को वहाँ बैठना भी असह्य हो जाता है। जब लेखक उन्हें रिजर्वेशन के बारे में पूछताछ करता है तब वे सामान्य क्लास से यात्रा पसंद करने और क्लाइंट फीस ज्यादा न देने से बचत करने की बात स्पष्ट करते हैं। वकील साहब की स्पष्टवादिता देखकर लेखक भी स्पष्ट हो जाता है कि उन्हें लेखन में रुचि है। इसलिए वे लोगों के जीवन से परिचित होना चाहता है ताकि लेखन के लिए यही अनुभव उपयोगी हो जाए। इस पर वकील साहब अपने पाँच-छह वर्ष कचहरी जाने की आप बीती ही सुनाने लगते हैं। वकीली पेश में आने की वे एक बड़ी रोचक कहानी बताने लगते हैं-पढ़ते समय जीवन का लक्ष्य तय नहीं किया था। बी.ए. उत्तीर्ण करने पर सरकारी नौकरी में नायब तहसीलदार बनाना चाहता था, मगर पहुँच न होने की वजह से काम नहीं बन सका।

Scanned by CamScanner

बी.टी. सी. कर मास्टरी करने की सोची तो वह पेशा बड़ा डल प्रोफेशन तथा दमघुटी लगने और समाज में इज्जत नहीं होने से उसे भी छोड़ दिया। भविष्य का चिंतन करने के बाद आँखों के सामने वकालात पेशा के सुनहले चित्र आने लगे; जैसे-बड़े-बड़े मुकदमे आना, लंबी-चौड़ी जमीन खरीदना, आलीशान मकान बनाना, मोटर खरीदना, नौकर-चाकर, वकालात अच्छी जमने पर असेम्बली में खड़े रहना, प्रभावशाली राजनीतिक दल में शामिल होना, असेम्बली में मिनिस्टर बनना, चीफ मिनिस्टर बनना और देश का प्राइम मिनिस्टर बनना आदि। आज जितने ऊँचे दर्जे के राजनीतिज्ञ हैं; वे सब वकील है। महात्मा गांधी जी भी वकालात की सीढ़ी से ऊपर चढ़े थे, इसलिए लॉ करने का निश्चिय किया। दो साल कठिन परिश्रम कर प्रथम श्रेणी में एल.एल.बी. की। व्यवसाय का केंद्र तथा एक प्रगतिशील शहर खांडवा शहर के वकीलों के प्रतिष्ठित मुहल्ले जवाहरगंज में एक छोटा-सा मकान किराये पर लिया। अच्छे मोड़दार अक्षरों की नाम की तख्ती लिखवाई। सामने के कमरे में कुर्सी, टेबलें और एक-दो बेंचें जमा दीं। टेबल के 'रेक' पर दस-पाँच पुस्तकें सजा ली। कुछ पुरानी 'ऑल इंडिया रिपोर्टर की फाइलें रख लीं। बस! ऑफिस खुल गया। मित्रों ने एक मुंशीजी को साथ रख दिया। वे अच्छे घर से होने की वजह से जूनियर वकील के पास काम करने में उन्हें कोई दिक्कत नहीं थी। वे रोज प्रातः आते और दस बजे लौट जाते और मैं प्रतिदिन ग्यारह बजे आता और पांच बजे तक 'बार रूम' (वकीलों के कमरे) में बैठता। वहाँ दुनिया भर की राजनीतिज्ञों की आलोचना होती, शहर की भली-बुरी घटनाओं की चर्चा होती, कचहरी में चलते मुकदमों की चक-चक चलती, मेजिस्ट्रेटों पर फबितियाँ कसी जाती। वे भी ऐसी किसी-न-किसी चर्चा में उलझे रहते। कभी किसी अदालत में रोचक मुकदमे को सुनने चले जाते। पांच बजे और कचहरी की भीड़ कम होते ही घर लौट जाते। यह सिलसिला लगातार तीन-चार महीने तक चलता रहा।

एक दिन मुंशीजी गंभीर होकर कहते हैं, 'वकील साहब! इस तरह तो हम लोगों का काम नहीं चलेगा। आप तो इस शहर में बिल्कुल नये हो। बिना जान पहचान के-वसीले के धंधा नहीं चलेगा, आपके साथ मैं भी कोरा रहता हूँ। कम-से-कम कचहरी के आने-जाने और चाय-पानी का तो खर्च मेरा भी निकलना चाहिए। आप मानो तो एक सलाह दूँ? आपको एक-दो 'टाउट' (दलाल) रखने पड़ेंगे। पहले उन्हें जरा ज्यादा कमीशन देना होगा।' मुंशीजी की सलाह मान ली और दूसरे ही दिन मुंशींजी एक टाउट ले आए। टाउट फीस का चालीस प्रतिशत कमीशन लेकर काम करने पर राजी हो गया। टाउट और मुंशी चले गए; उस दिन हर्ष की अनगिनत हिलोरे उठी कि 'कल मुकदमा आएगा फीस मिलेगी। कल सचमुच मैं वकील बनकर कचहरी जाऊँगा।' रात को बड़ी देर तक वकालात के मधुर सपने जागते-जागते ही देखता रहा। इस बीच कब नींद आई पता नहीं चला। दूसरे दिन सुबह नहा-धोकर तैयार हो गया और श्रद्धापूर्वक देवस्थान जाकर पूजा-अर्चना की।

Scanned by CamScanner

रामायण के कुछ पृष्ठ पढ़े। सभी को अचरज हो गया। सोचा कि कचहरी की बात किसी को नहीं बताऊंगा, जबकि कचहरी जाकर वापस आने के बाद ही बता दूँगा। सुबह आठ बजे ऑफिस जाकर टेबल-कुर्सी पर जम गया। टाइम्स ऑफ इंडिया पढ़ रहा; इतने में 'टाउट ठाकुर' एक स्त्री के साथ लेकर आ गया और उसके पीछे मुंशी जी भी आ गए। ठाकुर ने एक केस लाया था और उसके बारे में वह कहने लगा- 'यह बाई बुधवारे में 'पेशा' करती है। एक हम्माल (कुली) ने इस पर फौजदारी में शिकायत की है। वह हम्माल बाई के यहाँ आता-जाता था। एक दिन जब वह आया तो दूसरा हम्माल बैठा हुआ था। बस उनको देखते ही वह आपे से बाहर हो गया। गाली-गलौज करने लगा, मार-पीट पर आमादा हो गया। इस बाई ने उस हम्माल की सहायता से उसे बाहर निकाल दिया। बस उसने यह आरोप लगा दिया कि मुझे मुमताज बीबी और मारुती हम्माल ने मिलकर पीटा। ताजीराते हिंदी की दफा 324 में बाई पर मामला चल रहा है। आज पेशी है। मारुती हम्माल ने दूसरा वकील किया है। मैं सुनता रहा, अकबकाया-सा मन में कहता, भगवान तुमने भी क्या मुवक्किल भेजा हैं? - मेरी पूजा, मेरा पाठ क्या इसी मवक्किल के लिए था?' ठाकुर ने पूरा मामला बताकर बाई को वकील साहब की फीस अदा करने के लिए कहा तो बाई ने दस रुपए दिए। जब ठाकुर उसकी तरफ घूरकर देखता है तब वह कचहरी में पुकार के व्रत कुछ और पैसों के इंतजाम करने की बात करती है। इस पर मुंशीजी ने बाई को पूरे रुपयों का हिसाब बता दिया- 'देखो बाई! 1 रुपया वकालतनामा का, 2 रुपया वकालतनामा लिखाई, 2 रुपये मुकदमे की मिसल दिखाई, 1 रु. बयान टाइप कराई, 2 रुपये मुंशी का मेहनताना।' बाई अपने की पास के सबकुछ रुपए देने करती है और फिर जाने की इजाजत लेती है। इतने में ठाकुर अपना हिस्सा तीन रुपए उठाता है और फीस वसूलने का यकीन दिलाकर चला जाता है। इस मामले के लिए जब कचहरी के बार रूम में पहुँच जाता हूँ तब सभी यार पहला और महत्वपूर्ण मुकदमा पाने हेतु बाधाइयाँ देते हैं। मामला आनरेरी मजिस्ट्रेट की अदालत में था। अब तक क्लाइंट भी नहीं आए थे। दस से चार बजे तक मुंशी जी का दर्शन नहीं हो पाया तो लाइब्रेरी के बाबू से पूछा, 'आनरेरी मैंजिस्ट्रेट कब आते हैं?' जवाब उसने कहा- 'अभी तक तो आ जाना चाहिए।' वकील साहब जैसे ही बार रूम में गए; वैसे ही मुंशी जी जल्दी-जल्दी आ गए और कहने लगे, 'क्या कहें वकील साहाब! कम्प्रोमाइज हो गया। फरीकेन चले गए। सबेरे जो दो रुपए मैंने मेहनताने के लिये थे; उनमें से एक आप रखें और एक मैं रख लेता हूँ। कचहरी में तो क्या कहूँ, भांडों ने बात ही नहीं करने दी। समझौता फाइल होने के बाद जाते समय बाई ने माफी मांगते हुए कहा कि कचहरी आते वक्त भी पैसे उसके हाथ में नहीं आए। ग्लानिमिश्रित मुस्कान करते और पसीना पोंछते मैंने कहा- 'यह है मेरा पहला केस।' लेखक और भी वकील साहब के अनुभव सुनना चाहते थे, मगर गाडी खांडवा के प्लेटफार्म पर आ चुकी थी और वहाँ आवाजें आने लगी थी- 'हम्मांल! हम्माल!'।

Scanned by CamScanner

सारांश यह कि आ. विनय मोहन शर्मा लिखित 'वकील साहब' रेखाचित्र एक आम वकील का चित्रण करता है। प्रस्तुत रेखाचित्र में एक ऐसा भोलाभाला, स्पष्टवादी और सच बोलने वाला वकील है; जिसे जिंदगी में एक केस मिल जाता है; जो पहला और आखरी होता है। यह केस उसे मुंशी और दलाल के सहारे मिला था जो कि काम्प्रमाइज हो जाता है। जीवन के जिन सुनहले सपनों के साथ वकील साहब लॉ पूरा करते हैं चार-पांच सालों में उसका पर्दाफाश हो जाता है। प्रस्तुत रेखाचित्र के माध्यम से वकालात पेशा की असलियत अवगत हो जाती है। मानव जीवन के किसी भी क्षेत्र में आदमी अगर भोला-भाला रहता है तो उसकी अवस्था वकील साहब की तरह दयनीय हो जाती है; इसलिए हर व्यक्ति को हर घड़ी चौकन्ना रहना चाहिए। प्रस्तुत रेखाचित्र यही संदेश लेकर पाठकों के सामने आता है।

4.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न।

1. आ. विनय मोहन शर्मा का जन्म सन् ..... ई. में हुआ।

   (क) 1906 *(ख) 1905* *(ग) 1908* *(घ) 1910*

2. आ. विनय मोहन शर्मा का मूल नाम ..... है।

   (क) गदाधर सिंह *(ख) गदाधर शर्मा*

   (ग) रामकुमार प्रसाद तिवारी *(घ) पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी*

3. 'ये वकील साहब ..... में रहते हैं।'

   (क) बरसतगंज *(ख) फुरसतगंज* *(ग) करसतगंज* *(घ) मरसतगंज*

4. 'श्रीमान ..... में विराजते हैं।'

   (क) जवाहरगंज *(ख) फवारगंज* *(ग) भवारगंज* *(घ) सवारगंज*

5. 'ये प्राय: फुरसत में रहते हैं, ... (प्रतापगढ़) से आकर बसे हैं।'

   (क) देस *(ख) विदेश* *(ग) गाँव* *(घ) शहर*

6. 'गदाधर सिंह ..... पास करने का निश्चिय कर लेते हैं।'

   (क) बी.टी.सी. *(ख) बी.ए.* *(ग) एम.बी.ए.* *(घ) लॉ*

7. 'कल मुकदमा आयेगा फीस मिलेगी। कल सचमुच मैं ..... बनकर कचहरी जाऊँगा।'

   (क) गवाह *(ख) वकील* *(ग) जज* *(घ) टाउट*

Scanned by CamScanner

8. 'वकील साहब, ये ..... रुपये लीजिए। क्या करूँ? मेरी हालत ठीक नहीं है।'

(क) बीस (ख) चालिस (ग) दस (घ) एक

9. 'क्या कहें वकील साहब! ..... हो गया।'

(क) वेरीफाय (ख) तयप्राइज (ग) काम्प्रोमाइज (घ) सरप्राइज

10. 'कचहरी आते वक्त भी पैसे मेरे हाथ नहीं आ पाये। वकील साहब से माफी माँगना। ..... अर्ज।'

(क) विनती (ख) प्रार्थना (ग) आदाब (घ) स्मरण

11. 'यह है मेरा ..... केस।'

(क) तीसरा (ख) दूसरा (ग) चौथा (घ) पहला

12. 'वकील साहब जब खांडवा प्लेटफार्म पर पहँचु तो ..... आवाजें सुनने को मिली।'

(क) कमाल-कमाल (ख) हम्माल-हम्माल (ग) वकील-वकील (घ) जज-जज।

4.5 पारिभाषिक शब्द

- **पेशा** : जीविकोपार्जन का साधन, धंधा, काम, वेशावृत्ति।
- **नालिश** : फरियाद, अभियोग, मुकदमा।
- **आमादा** : तैयार, तत्पर, उद्यत।
- **ताजिरात** : दंडविधियों का संग्रह, दंडसंहिता।
- **पेशी** : पेश होने की अवस्था, उपस्थित होना, वकील, मुख्तार आदि को दिया जानेवाला धन।
- **मुवक्किल** : अपना वकील करने वाला, काम के लिए नियुक्त करने वाला।
- **मुलजिम** : अभियुक्त।
- **फुर्ती** : चुस्ती, जल्दी, तेजी।
- **फरीकेन** : क्लाइंट।
- **टाउट** : दलाल, बिचवई, बिचौलिया, मध्यस्थ, कुटना, पारसियों की एक जाति।
- **आदाब** : नमस्कार, अदब-कायदा, व्यवहार नियम।

Scanned by CamScanner

4.6 स्वयं–अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1. *(ख) 1905*
2. *(घ) पं. शुकदेव प्रसाद तिवारी*
3. *(ख) फुरसतगंज*
4. *(क) जवाहरगंज*
5. *(क) देस*
6. *(घ) लॉ*
7. *(ख) वकील*
8. *(ग) दस*
9. *(ग) काम्प्रोमाइज*
10. *(ग) आदाब*
11. *(घ) पहला*
12. *(ख) हम्माल–हम्माल।*

4.7 सारांश

1. आ. विनय मोहन शर्मा लिखित 'वकील साहब' रेखाचित्र एक आम वकील का चित्रण करता है। प्रस्तुत रेखाचित्र में एक भोलाभाला, स्पष्टवादी और सच बोलने वाला वकील साहब है जिसे जिंदगी में एक केस मिल जाता है और वह भी मुंशी और दलाल के सहारे। वह केस जब काम्प्रोमाइज हो जाता है तब गदाधर सिंह लॉ पूर्ति सुनहरे सपनों पर पानी फेर जाता है।
2. मानव जीवन के किसी भी क्षेत्र में आदमी अगर भोलाभाला रहता है तो उसकी अवस्था दयनीय हो जाती है।
3. यह रेखाचित्र वकालात पेशा की दयनीयता के साथ–साथ भोलेभाले वकील की वकालात की हालात पर व्यंग्य कसता है।

4.8 स्वाध्याय

1. 'वकील साहब' रेखाचित्र का सारांश लिखिए।

Scanned by CamScanner

2. 'वकील साहब' रेखाचित्र के माध्यम से वकील साहब गदाधर सिंह का चरित्र-चित्रण कीजिए।
3. 'वकील साहब' रेखाचित्र का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
4. 'वकील साहब' रेखाचित्र का व्यंग्य समझाइए।

4.9 क्षेत्रीय कार्य

1. किसी एक वकील के विचारों पर प्रकाश डालिए।
2. किसी एक वकील का चरित्र-चित्रण कीजिए।

4.10अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. **आ. विनय मोहन शर्मा** : रेखाएँ और रंग।
2. **महादेवी वर्मा** : अतीत के चलचित्र।
3. **रामवृक्ष बेनीपुरी** : माटी की मूरतें।
4. **बनारसीदास चतुर्वेदी** : रेखाचित्र।
5. **विष्णु प्रभाकर** : कुछ शब्दः कुछ रेखाएँ।

-- 0 --

12. म. गांधी (संस्मरण)

– रामकुमार वर्मा

अनुक्रम

4.1 उद्देश्य
4.2 प्रस्तावना
4.3 विषय विवरण
4.3.1 रामकुमार वर्मा का परिचय
4.3.2 'महात्मा गांधी' संस्मरण का कथानक

Scanned by CamScanner

4.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

4.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

4.6 स्वयं-अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

4.7 सारांश

4.8 स्वाध्याय

4.9 क्षेत्रीय कार्य

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

4.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई के अध्ययन के बाद आप-

1. महात्मा गांधी जी के विचारों को जान जाएँगे।
2. मानव जीवन में समय का महत्व जान जाएँगे।
3. छात्रों में देशप्रेम जागृत होगा।
4. महात्मा गांधी जी की आकर्षक स्मृतियों से नयी पीढ़ी प्रेरणा प्राप्त करेगी।
5. छात्र महात्मा गांधी जी के आदर्श व्यक्तित्व का अनुकरण करेंगे।

4.2 प्रस्तावना

लेखक रामकुमार वर्मा लिखित 'महात्मा गाँधी' संस्मरण महात्मा गांधी जी की आकर्षक स्मृति-चित्रों को रेखांकित करता है। महात्मा गांधी जी का असहयोग आंदोलन, माँ कस्तुरबा की ममता, समय का मानव जीवन में महत्त्व प्रस्तुत संस्मरण में अंकित किया गया है। उनका असहयोग आंदोलन जुल्म-अन्याय, जोर-जबदस्ती के खिलाफ था; जब गोरखपुर (उत्तरप्रदेश) में चौरी-चौरा कांड होता है तब वे अपना असहयोग आंदोलन वापस लेते हैं क्योंकि उनका आंदोलन मानव हितकारी था, अहितकारी नहीं। समय के सबसे बड़े सर्वेक्षक महात्मा गांधी जी जीवन में मिनट-मिनट का हिसाब लगाते हैं क्योंकि समय की गति किसी के लिए भी नहीं रूकती। विदेशों में जिन देशों ने प्रगति की है, उन्होंने समय की गति को समय पर पहचाना है, इसलिए अपने समय के एक-एक क्षण को ध्यान में रखते हुए अपनी प्रगति करनी चाहिए; प्रस्तुत संस्मरण यही संदेश देता है।

Scanned by CamScanner

'महात्मा गांधी' यह संस्मरण नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी है; जो मनुष्य की अंदरुनी ऊर्जा, प्रकाश और आनंद को शक्तिशाली बना देता है। मानव जीवन में आनंद एवं उत्साह का सुगंध बरकरार रहे तो जीवन में कोई भी कार्य असंभव नहीं है। जिस प्रकार चिड़िया संगीत सिखने के लिए किसी अध्ययनशाला में नहीं जाती उसी प्रकार मानव को भी हर कार्य सीखने के लिए किसी अध्ययनशाला की जरूरत नहीं जबकि अंदरुनी ऊर्जा अर्थात् हृदय प्रबल स्वर की जरूरत होती है; यही संदेश प्रस्तुत संस्मरण पाठकों को देता है।

4.3 विषय विवेचन

4.3.1 राम कुमार वर्मा का परिचय

रामकुमार वर्मा का जन्म 15 सितंबर, 1905 को मध्यप्रदेश के सागर में हुआ। उनके पिताजी लक्ष्मीप्रसाद वर्मा डिप्टी कलेक्टर थे। उनकी माँ का नाम श्रीमती राजरानी देवी था; जिन्होंने रामकुमार को प्रारंभिक शिक्षा घर पर ही दी। उनके भाई रामेश्वरदयाल वर्मा प्रतिष्ठित वकील थे। रामकुमार वर्मा को बचपन में 'कुमार' नाम से पुकारा जाता था। अलौकिक प्रतिभा के धनी रामकुमार वर्मा हमेशा अपनी कक्षा में अव्वल आया करते थे, इसी कारण उनके स्कूल के हेड मास्टर मि. अब्दुल रहीम उन्हें दसवीं की परीक्षा में मध्यप्रदेश में अव्वल आने का सपना देख रहे थे। छात्रावस्था में आपने कई नाटकों में सफल रंगकर्मी के रूप में कार्य किया। नौंवीं कक्षा वे महात्मा गांधी जी के असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। सन् 1929 ई. में एम. ए. की परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने नागपुर विश्वविद्यालय' में 'हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास' विषय पर पीएच्. डी. की उपाधि प्राप्त की। बाद में वे प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रवक्ता एवं विभागाध्यक्ष के रूप में कार्यरत रहें। रूसी सरकार के विशेष आमंत्रण पर उन्होंने मास्को विश्वविद्यालय में एक साल तक शैक्षिक काय किया। उन्हें कविता, संगीत, कलाओं में गहरी रुचि थी। 17 वर्ष की आयु में उन्होंने एक कविता की प्रतियोगिता में 51 रुपए का पुरस्कार जीता था; जिससे उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ हो गया। उन्होंने देश-विदेश में हिंदी भाषा का प्रचार-प्रसार किया। सन् 1957 ई. में उन्होंने मास्को विश्वविद्यालय के अध्यक्ष के रूप में सोवियत संघ की यात्रा की। सन् 1963 ई. में नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय ने उन्हें शिक्षा सहायक के रूप में बुलाया और सन् 1967 ई. में श्रीलंका के भारतीय भाषा विभाग के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। सन् 1990 ई. में उनका निधन हो गया। वे जीवन की विपरीत स्थिति में साहस और शांति बनाए रखते थे। निराशा एवं अवसात के प्रसंग में वे अपनी मुस्कान कायम रखते थे। गंभीरता के साथ विनम्रता उनके व्यक्तित्व का अनोखा रंग है।

Scanned by CamScanner

कृतित्व

आधुनिक हिंदी साहित्य में रामकुमार वर्मा ख्यातिकीर्त नाटककार, व्यंग्यकार, एकांकीकार, हास्य-कवि, आलोचक और अध्यापक के रूप में प्रसिद्ध है। उन्हें हिंदी एकांकी का जनक माना जाता है। सन् 1930 ई. में लिखित ‘बादल की मृत्यु’ उनका पहला एकांकी है; जो फेंटेसी के रूप में प्रसिद्ध है। उन्होंने ऐतिहासिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक, सांस्कृतिक और साहित्यक विषय पर 150 से अधिक एकांकी लिखे हैं। उनके काव्य में रहस्यवाद और छायावाद की झलक प्रखर मात्रा में दिखाई देती है। नाटककार एवं आलोचक के रूप में उन्होंने साहित्य सृजन के नए आयाम खोज निकाले। कविता में वे साधक की भूमिका में नजर आते हैं। अपने जीवन के अनुभवों को उन्होंने नाटकों की विषयवस्तु के रूप में चुना। चिंतन एवं मनन की तटस्थ अभिव्यक्तिने उनके आलोचकीय व्यक्तित्व की मुद्राए निर्धारित की।

1. **काव्य-संग्रह** : ‘चित्ररेखा’, ‘चंद्रकिरण’, ‘अंजलि’, ‘अभिशाप’, ‘रूपराशि’, ‘संकेत’, ‘एकलव्य’, ‘वीर हम्मीर’, ‘कुल-ललना’, ‘निशीथ’, ‘नूरजहाँ शुजा’, ‘जौहार’, ‘आकाशगंगा’, ‘उत्तरायण’, ‘कृतिका’ आदि।

2. **नाटक** : ‘विजय पर्व’, ‘कला और कृपाण’, ‘नाना फड़णवीस’, ‘सत्य का स्वप्न’ आदि।

3. **एकांकी संग्रह :** ‘पृथ्वीराज की आँखें’, ‘रेशमी टाई’, ‘चारूमित्रा’, ‘विभूति’, ‘सप्तकिरण’, ‘रूपरंग’, ‘रजत रश्मि’, ‘ऋतुराज’, ‘दीपदान’, ‘रिमझिम’, ‘इंद्रधनुष’, ‘पांचजन्य’, ‘कौमुदी महोत्सव’, ‘मयूर पंख’, ‘खट्ठे-मिठ्ठे एकांकी’, ‘ललित एकांकी’, ‘कैलेंडर का आखिरी पन्ना’, ‘जूही के फूल’ आदि।

3. **आलोचना एवं साहित्येतिहास** : ‘कबीर का रहस्यवाद’, ‘इतिहास के स्वर’, ‘साहित्य समालोचना’, ‘साहित्य शास्त्र’, ‘अनुशीलन’, ‘समालोचना समुच्चय’, ‘हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास’ और ‘हिंदी साहित्य का संक्षिप्त इतिहास’।

4. **गद्य गीत संग्रह** : ‘हिमालय’।

5. **संपादन** : ‘कबीर ग्रंथावली’।

6. **पुरस्कार :-**

   अ) सन् 1963 को उन्हें पद्मभूषण सम्मान से सम्मानित किया गया।

   आ) ‘चित्ररेखा’ काव्य-संग्रह के लिए उन्हें हिंदी का सर्वश्रेष्ठ देव पुरस्कार प्राप्त हो गया।

Scanned by CamScanner

इ) 'सप्तकिरण' एकांकी संग्रह के लिए उन्हें अखिल भारतीय साहित्य सम्मेलन का पुरस्कार प्राप्त हो गया।

ई) मध्य प्रदेश शासन परिषद से उनके 'विजय पर्व' नाटक के लिए प्रथम पुरस्कार मिला।

4.3.2 'महात्मा गांधी' संस्मरण का कथानक

लेखक रामकुमार वर्मा लिखित 'महात्मा गांधी' यह एक ख्यातिकीर्त संस्मरण है; जो मानव जीवन के लिए आदर्शवत एवं प्रेरणादायी है। प्रस्तुत संस्करण में लेखक के जीवन के दो पक्ष है। एक पक्ष महात्मा गांधी जी के असहयोग आंदोलन में हिस्सा लेने से संबंधित है तो दूसरा पक्ष माँ कस्तुरबा की ममता और गांधी जी का प्रेरणादायी विचारों से संबंधित है।

रामकुमार वर्मा बचपन से महात्मा गांधी जी का नाम सुनते आ रहे थे और कई अखबारों में गांधी जी की विविध मुद्राओं के चित्र भी देखते रहें। इसलिए रामकुमार वर्मा महात्मा गांधी जी के विचारों से काफी प्रभावित थे। गांधी जी पर उनकी इतनी श्रद्धा थी कि वे उन्हें देश के स्वर्णिम भविष्य के निर्माता मानते थे। सन् 1921 में नागपुर में अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन संपन्न हुआ; जिसमें विदेशी शासन यानी अंग्रेज सरकार के खिलाफ असहयोग का प्रस्ताव पारित किया गया। यह असहयोग की लहर किसी समुद्री ज्वार की तरह पूरे देश के विचारों में आंदोलित होने लगी और यह आंदोलन देश-व्यापी बन गया। महात्मा गांधी जी ने खिलाफत आंदोलन को सहानुभूति प्रदान की और उनके इस आंदोलन को मुसलमानों का भी सहयोग मिला। उस समय भारत के मुसलमानों के दो प्रसिद्ध नेता थे-शौकत अली और मुहम्मद अली, जो अलीबंधु के नाम से प्रसिद्ध थे। अलीबंधु महात्मा गांधी जी के साथ असहयोग आंदोलन में शामिल हो गए। वे दोनों देश भर खिलाफत आंदोलन और असहयोग आंदोलन का प्रचार-प्रसार करते थे। एक दिन मौलाना शौकत अली मध्य प्रदेश के नरसिंहपुर नगर में आ गए। उस समय रामकुमार वर्मा नौंवीं कक्षा के छात्र थे। उनके पिता डिप्टी कलेक्टर थे और भाई रामेश्वरदयाल वर्मा एक प्रतिष्ठित वकील थे। लेखक स्कूल का मेधावी छात्र था। उसे सरकारी छात्रवृत्ति भी प्राप्त थी। योग्यता की दृष्टि से वह क्लास का मॉनीटर भी बना था। स्कूल के हेड मास्टर मि. अब्दुल रहीम को उम्मीद थी कि वह दसवीं कक्षा की परीक्षा में मध्यप्रदेश में अव्वल आ जाएगा और स्कूल का नाम मध्यप्रदेश की शिक्षा के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों से लिख देगा।

उस दिन मौलाना शौकत अली नगरसिंह के महात्मा गांधी चौक में आयोजित महासभा को संबोधित कर रहे थे; जिसमें उन्होंने अंग्रेज सरकार की खुली आलोचना की। उन्होंने यह भी कहा

Scanned by CamScanner

कि 'इस जुल्म ढाने वाली सरकार ने हिंदुस्तान के जिस्म से खून की एक-एक बूँद निचोड़ ली है और इस मुल्क को मुर्दा बना दिया है।' इतना ही नहीं, उन्होंने गांधी जी के असहयोग आंदोलन को हिम्मत से साथ देने और विदेशी सरकार को नेस्तनाबूत करने का ऐलान किया। इसमें उन्होंने सरकारी नौकरियाँ छोड़ने, वकीलों को वकालात बंद करने, स्कूल छोड़ने का ऐलान किया और सभा को ललकारा कि 'है यहाँ कोई माई का लाल?'

लेखक पल-भर क्रांति की थपेड़ों से अस्त-व्यस्त हो गया। लेखक पर उनके आवेश भरे भाषण का गहरा असर हो गया और अपनी मां को देवी समझने वाले लेखक रामकुमार वर्मा ने वहीं पर स्कूल न जाने की घोषणा की कि 'यह क्षणिक आवेश नहीं है, मैंने स्कूल छोड़ दिया है।' इस घोषणा के बाद पिताजी ने उन्हें उनके अंधकारमयी भविष्य से अवगत कराया। गांधी जी के विचारों में सराबोर लेखक गाँव-गाँव जाकर खद्दर बेचने लगा, प्रभातफेरियों में जाकर गीत गाने लगा, चरखा चलाने लगा। प्रभातफेरी में गीतों की आवश्यकता थी, इसलिए वे काव्य रचना करने लगे और नौंवीं कक्षा में कवि बन गए और उनकी कविताओं को अंतर्राष्ट्रीय सम्मान भी प्राप्त हो गया। गोरखपुर-उत्तरप्रदेश में चौरी-चौरा कांड हुआ और गांधी जी ने अपना असहयोग आंदोलन वापस लिया; जो उनके जीवन का एक पक्ष है।

दूसरा पक्ष अपनी माँ के कहने पर लेखक अपना अध्ययन फिर शुरू करते हैं। सन् 1929 में एम.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण हो जाते हैं और प्रयाग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में प्रवक्ता के रूप में नियुक्त हो जाते हैं। हिंदी प्रेम के कारण उन्हें अखिल भारतीय हिंदी सम्मेलन में स्वर्गीय पुरुषोत्तमदास टंडन ने परीक्षा मंत्री बना दिया था। सन् 1937 ई. में उत्तमा परीक्षा की मौखिक परीक्षा हेतु वर्धा जाने का सुयोग प्राप्त हुआ। महात्मा गांधी वहीं सेवाग्राम में रहते थे। इसलिए लेखक ने स्व. श्रीमन्नारायण अग्रवाल से गांधीजी के दर्शन करने की इच्छा प्रकट की। उन्होंने गांधी जी के प्राइवेट सेक्रेटरी द्वारा दूसरे दिन प्रात: 8.30 बजे का समय निश्चित किया। दूसरे दिन गांधी जी की सेवाग्राम कुटी पर श्रीमन्नारायण के साथ समय पर पहुँचे। कुटी की दाहिनी ओर श्रीमती कस्तूरबा का निवास था। वे सामने दिखने पर लेखक उन्हें प्रणाम करते हैं। उन्होंने लेखक को अंदर बुलाया। उन्होंने कहा कि 'जब माँ के पास बेटा आता है तो मां के मन में पहली बात यह आती है कि मेरे बेटे ने कुछ खाया या नहीं?' लेखक नाश्ता करके आने की बात उनसे करता है फिर भी उन्होंने अंजीर के बड़े पत्तों पर शहद, छुहारे और अन्य कुछ मीठे फल खाने के लिए रखा दिए और कहा, 'माँ को सुख मिलता है, जब वह बेटे को अपने सामने बिठाकर खिलाती है। मेरा बेटा मेरे सामने खाये।' फलाहार करने के बाद लेखक गांधी जी से मिलने चले जाते हैं।

Scanned by CamScanner

हालाँकि गांधी जी समय के सबसे बड़े सर्वेक्षक थे। उनका मिनट-मिनट का कार्यक्रम निर्धारित होता था। निर्धारित समय से लेखक को दस मिनट का विलंब हो चुका था। वे दूसरा कार्यक्रम अर्थात् एक आदमी उनके शरीर पर तेल की मालिश करने लगा था। श्रीमन्नारायण ने लेखक का परिचय दिया कि वे इलाहाबाद विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं और सन् 1921 ई. के असहयोग आंदोलन में उन्होंने स्कूल छोड़ दिया था। उन्हें यह पुरानी स्मृति याद थी। उन्होंने लेखक को प्रोफेसर होने से बधाई दी; मगर उन्होंने लेखक को समय का महत्व अवगत कराया कि 'प्रोफेसर को दस मिनट की देरी हो गयी।' बार-बार जोर देकर वे कह रहे थे कि 'दस मिनट-दस मिनट।' आगे उन्होंने यह भी कहा कि 'जब प्रोफेसर को दस मिनट की देर होती है तो उसके विद्यार्थी को दस घंटे देर होती है। जब विद्यार्थी को दस घंटे की देरी होती है तो समाज को दस महीने की देरी होती है, तब देश दस वर्ष पीछे चला जाता है। प्रोफेसर की दस मिनट की देरी देश को दस वर्ष पीछे ले जाती है।' इसके लिए लेखक गांधी जी से क्षमा माँगते हैं कि 'बापू, देर के लिए क्षमा चाहता हूँ। माँ की ममता ने मुझसे देरी करवा दी।' इस पर उन्होंने तीव्र स्वर में कहा कि 'माँ की ममता अपनी जगह है और समय की गति अपनी जगह है। दोनों को अलग-अलग रखना चाहिए।' इस पर लेखक बापूजी से यकीन दिलाते हैं कि 'मैं अपने समय के एक-एक क्षण का ध्यान रखूँगा। इस बार आप मुझे क्षमा कर दें।' गांधी जी ने विदेश का उदाहरण दिया कि विदेशों में जिन देशों ने प्रगति की है, उन्होंने समय की गति को पहचाना है।. '.....जब हमारा देश समय की कीमत करना जानेगा, तब हमारे देश को किसी बात की कमी नहीं रहेगी।'

जब किसी महापुरुष के पास दर्शनार्थ कोई व्यक्ति पहुँचता है तो उसे भेंट लेकर जाना चाहिए। उसके अनुसार लेखक भी अपना काव्य-संग्रह 'चित्ररेखा'; जिसे दो हजार रुपए का हिंदी का सर्वश्रेष्ठ अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुका था; वही भेंट देने हेतु बापूजी के सामने रख दिया। तब गांधी जी ने हरिजनोद्धार के लिए उस पुरस्कार राशि में से अपना हिस्सा मांगा। लेखक ने उस समय जो पास था, वह समर्पित कर दिया। बापूजी ने गीतों की पुस्तक खोली और पूछा कि यह गीतों का संग्रह है, तुम गाना गाते हो।' लेखक ने उनसे शास्त्रीय ढंग से संगीत का अभ्यास नहीं करने की बात की। तब बापूजी लेखक को सवाल करते हैं कि 'तुम सुबह कितने बजे उठते हो?... टहलने जाते हो? ...चिड़ियों का संगीत सुना हो? ...चिड़ियों ने किस शाला में संगीत सीखा है।' इन सारे प्रश्नों से लेखक निरुत्तर हो जाता है। इस पर गांधीजी उन्हें संदेश देते हैं कि 'जो स्वर हृदय से निकलता है, आत्मा से प्रस्फुटित होता है, वही संगीत है और इस दृष्टि से मैं भी अच्छा गायक हूँ क्योंकि हर बात को मैं अपने से कहता हूँ। तुम भी जो बात कहो वह कंठ से न कहो, हृदय से कहो।' आखिरी में घड़ी देखते हुए समय समाप्त होने का उन्होंने लेखक को संकेत दिया। गांधी

Scanned by CamScanner

जी से मिलकर लेखक ने मानो आनंद एवं प्रकाश के मानसरोवर में नहाने का अनुभव किया। मानव शरीर कितना दुर्बल है और आत्मा कितना शक्तिशाली है जिसका एक-एक वाक्य से देश की राजनीति, देश का दर्शन, देश धर्म नयी-नयी परिभाषाएँ सीखाता है। उन्होंने देश के स्वाधीनता का सपना देखा था; जो कि साकार होकर रह गया। यह केवल उनके अंदर के उत्साह एवं आनंदा के कारण ही संभव हो गया। इसलिए आज भी हमें गांधी जी के विचारों को अपनाना पड़ेगा।

सारांश यह कि लेखक रामकुमार वर्मा लिखित 'महात्मा गाँधी' संस्मरण महात्मा गांधी जी का असहयोग आंदोलन, माँ कस्तुरबा की ममता और समय का मानव जीवन में महत्व प्रस्तुत करता है। इसमें महात्मा गाँधी जी की आकर्षक स्मृति-चित्रों के माध्यम से असहयोग आंदोलन चित्रण किया है। उनका यह आंदोलन भारतीय जनता के हित में था। महात्मा गांधी जी जीवन में समय को बहुत महत्व देते हैं। वे समय के सबसे बड़े सर्वेक्षक थे। समय की गति किसी के लिए भी नहीं रूकती और विदेशों में जिन देशों ने प्रगति की है, उन्होंने समय की गति को पहचाना है इसलिए अपने समय के एक-एक क्षण को ध्यान में रखते हुए हर एक को अपनी प्रगति करने का संदेश वे देते हैं। यह संस्मरण नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी है; जो मनुष्य की अंदरुनी की ऊर्जा एवं प्रकाश को शक्तिशाली बना देता है और आनंद को द्विगुनित करता है। मानव जीवन में आनंद एवं उत्साह का सुगंध बरकरार रहें तो जीवन में हर कार्य संभव हो जाता है। जिस प्रकार चिड़िया संगीत सिखने के लिए किसी अध्ययनशाला में नहीं जाती; उसी मानव को भी हर कार्य सीखने के लिए किसी अध्ययनशाला की जरूरत नहीं जबकि अंदरुनी ऊर्जा अर्थात् हृदय स्वर की जरूरत होती है।

4.4 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्न

1. 'महात्मा गाँधी' संस्मरण ..... है।

   (क) रामकुमार वर्मा (ख) राजेंद्र यादव (ग) मन्नू भंडारी (घ) आ. विनयमोहन शर्मा

2. रामकुमार वर्मा का जन्म मध्यप्रदेश के ..... में हुआ।

   (क) आगरा (ख) भोपाल (ग) जबलपुर (घ) सागर

3. रामकुमार वर्मा को बचपन में ..... नाम से पुकारा जाता था।

   (क) रामेश्वर (ख) राम (ग) कुमार (घ) शाम

4. रामकुमार वर्मा के पिताजी का नाम ..... है।

   (क) रामेश्वरदयाल वर्मा (ख) मि. अब्दुल रहीम

   (ग) लक्ष्मी प्रसाद वर्मा (घ) इनमें से कोई नहीं

Scanned by CamScanner

5. रामकुमार वर्मा का पहला एकांकी ..... है; जो फेंटेसी के रूप में प्रसिद्ध है।

(क) बादल की मृत्यु *(ख) पृथ्वीराज की आँखें*

(ग) 'विजय पर्व' *(घ) अंजलि*

6. रामकुमार वर्मा को ..... काव्य-संग्रह के लिए हिंदी का सर्वश्रेष्ठ देव पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

(क) चंद्रकिरण *(ख) अंजलि* *(ग) चित्ररेखा* *(घ) अभिशाप*

7. 'संसार की राजनीतिकदृष्टियाँ जिसकी परिक्रमा करती हैं उसका नाम ..... है।'

(क) लोकमान्य तिलक *(ख) महात्मा गांधी*

(ग) स्वातंत्र्यवीर सावरकर *(घ) सुभाषचंद्र बोस*

8. '.....- भी महात्मा गाँधी के साथ असहयोग आंदोलन में सम्मिलित हो गये।'

(क) अलीबंधु *(ख) कलीबंधु* *(ग) शौकत अली* *(घ) मुहम्मद अली*

9. 'है यहाँ कोई ..... - लाल?'

(क) साई *(ख) ताई* *(ग) भाई* *(घ) माई*

10. 'यह क्षणिक आवेश नहीं, मैंने ..... छोड़ दिया है।'

(क) कॉलेज *(ख) गाँव* *(ग) स्कूल* *(घ) देश*

11. 'गोरखपुर उत्तर प्रदेश में ..... कांड हुआ और महात्मा गांधी ने असहयोग आंदोलन वापस लिया।'

(क) जालियानवाला बाग *(ख) चौरी-चौरा* *(ग) खिलाफत* *(घ) इनमें से कोई नहीं*

12. 'कुटी की दाहिनी ओर ..... का निवास था।'

(क) कलावती *(ख) गुणवती* *(ग) सदाचारिणी* *(घ) श्रीमती कस्तूरबा*

13. '..... समय के सबसे बड़े सर्वेक्षक थे।'

(क) तिलक जी *(ख) वर्मा जी* *(ग) गांधी जी* *(घ) सावरकर जी*

14. 'प्रोफेसर की दस मिनट की देरी देश को ..... वर्ष पीछे ले जाती है।'

(क) चालिस *(ख) बीस* *(ग) तीस* *(घ) दस*

Scanned by CamScanner

15. 'विदेश में जिन देशों ने प्रगति की है, उन्होंने .... की गति को पहचाना है।'

(क) दिन (ख) रात (ग) विकास (घ) समय

4.5 पारिभाषिक शब्द

- **परिक्रमा** : चारों ओर घूमना, एक स्थान पर घूमता रहना।
- **खिलाफत** : खलीफा का पद, पैगंबर का प्रतिनिधि होना, विरोध।
- **नौनिहाल** : नया पैधा, बालक, बच्चा, नया किंतु होनहार।
- **सप्तऋषि मंडल** : आकाश में रात्रि में दिखने वाला एक तारामंडल।

4.6 स्वयं-अध्ययन के लिए प्रश्नों के उत्तर।

1. *(क) रामकुमार वर्मा*
2. *(घ) सागर*
3. *(ग) कुमार*
4. *(ग) लक्ष्मी प्रसाद वर्मा*
5. *(क) बादल की मृत्यु*
6. *(ग) चित्ररेखा*
7. *(ख) महात्मा गांधी*
8. *(क) अलीबंधु*
9. *(घ) माई*
10. *(ग) स्कूल*
11. *(ख) चौरी-चौरा*
12. *(घ) श्रीमती कस्तूरबा*
13. *(ग) गांधी जी*
14. *(घ) दस*
15. *(घ) समय।*

Scanned by CamScanner

4.7 सारांश

1. लेखक रामकुमार वर्मा लिखित 'महात्मा गाँधी' संस्मरण महात्मा गांधी जी की आकर्षक स्मृति-चित्रों को रेखांकित करता है। प्रस्तुत संस्मरण में महात्मा गांधी जी का असहयोग आंदोलन, माँ कस्तुरबा की ममता, मानव जीवन में समय का महत्त्व आदि का अंकन हुआ है।
2. प्रस्तुत संस्करण में लेखक के जीवन के दो पक्ष है। एक पक्ष महात्मा गांधी जी के असहयोग आंदोलन में हिस्सा लेने से संबंधित है तो दूसरा पक्ष माँ कस्तुरबा की ममता और गांधी जी का प्रेरणादायी विचारों से संबंधित है।
3. लेखक रामकुमार वर्मा लिखित 'महात्मा गाँधी' संस्मरण में समय के सबसे बड़े सर्वेक्षक महात्मा गांधी जी जीवन में मिनट-मिनट का हिसाब लगाते हैं क्योंकि समय की गति किसी के लिए भी नहीं रूकती। विदेशों में जिन देशों ने प्रगति की है, उन्होंने समय की गति को पहचाना है इसलिए हर कोई अपने समय के एक-एक क्षण को ध्यान में रखे और अपनी प्रगति करें।
4. 'महात्मा गांधी' संस्मरण नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी है; जो मनुष्य की अंदरुनी की ऊर्जा को शक्ति देता है। मानव जीवन में कोई भी कार्य असंभव नहीं है। जिस प्रकार चिड़िया संगीत सिखने के लिए किसी अध्ययनशाला में नहीं जाती; उसी प्रकार मनुष्य को भी हर कार्य सीखने के लिए किसी अध्ययनशाला की जरूरत नहीं है; उसे अंदरुनी ऊर्जा की जरूरत होती है।

4.8 स्वाध्याय

1. 'महात्मा गाँधी' संस्मरण का सारांश लिखिए।
2. 'महात्मा गाँधी' संस्मरण में चित्रित महात्मा गांधी जी के विचारों को स्पष्ट कीजिए।
3. 'महात्मा गाँधी' संस्मरण का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए।
4. 'महात्मा गाँधी' संस्मरण गांधी जी की आकर्षक स्मृतियों का ताना-बाना है- स्पष्ट कीजिए।
5. 'महात्मा गाँधी' के असहयोग आंदोलन का चित्रण कीजिए।
6. 'महात्मा गाँधी' संस्मरण में समय का महत्व किस तरह से अंकित किया गया है।
7. 'महात्मा गाँधी' संस्मरण नयी पीढ़ी के लिए प्रेरणादायी तथा आदर्श है- स्पष्ट कीजिए।

Scanned by CamScanner

4.9 क्षेत्रीय कार्य

1. महात्मा गांधी जी के विचारों पर प्रकाश डालिए।
2. महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन का परिचय दीजिए।
3. समय के महत्व को अंकित कीजिए।
4. माँ की ममता कस्तुरबा गांधी पर अपने विचार स्पष्ट कीजिए।

4.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1. **महादेवी वर्मा** : 'स्मृति की रेखाएँ।'
2. **देवेंद्र सत्यार्थी** : 'यादों के काफिले।'
3. **विद्यानिवास मिश्र** : 'चिड़िया रैन बसेरा'
4. **कमलेश्वर** : 'मेरा हमदम मेरा दोस्त।'
5. **माखलनलाल चतुर्वेदी** : 'समय के पाँव।'

❑❑❑

Scanned by CamScanner